अध्याय
08

हे भूख! मत मचल, हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर

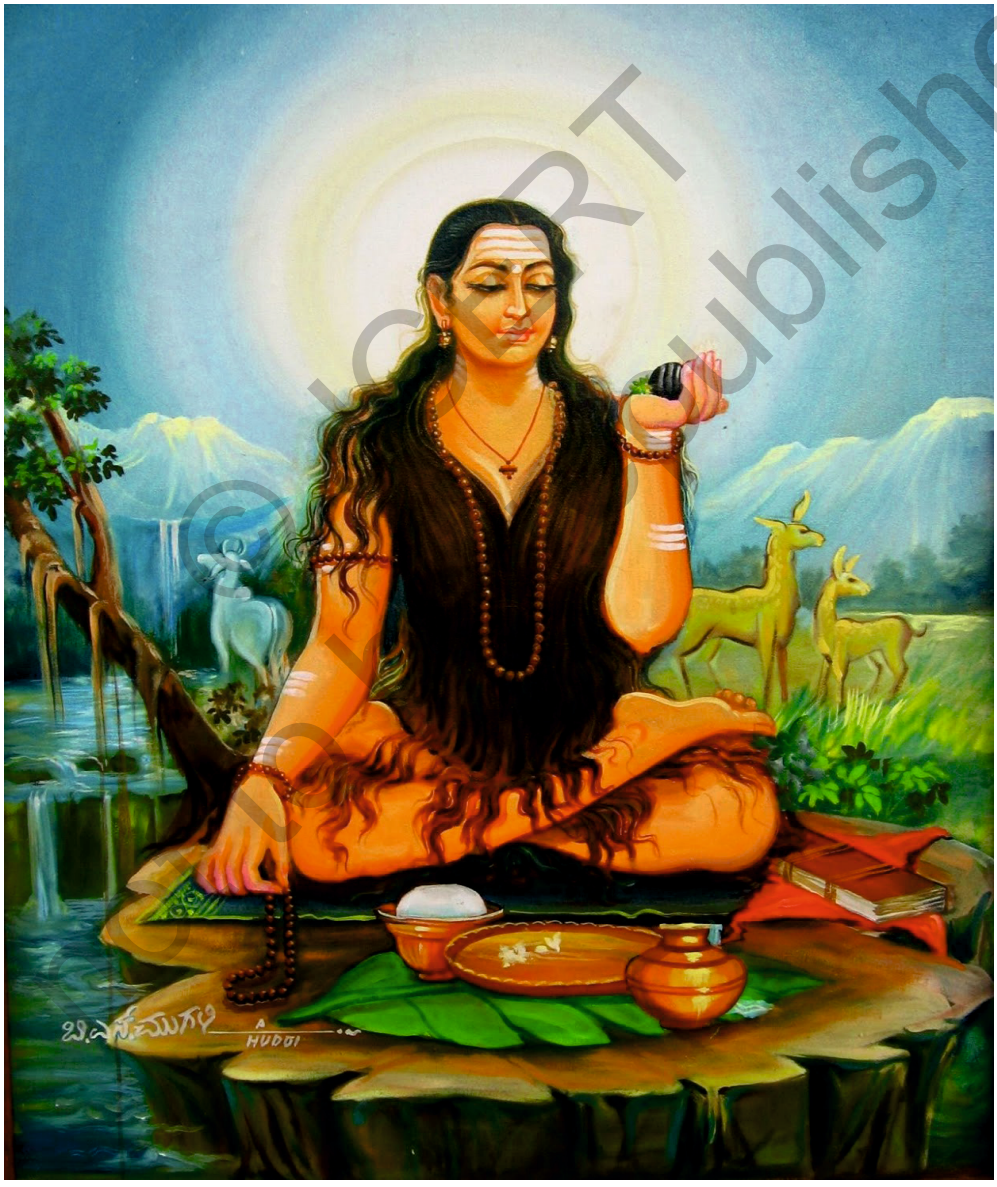

अक्क महादेवी

© NCERT not to be republished

1. जीवन-परिचय

I. **जन्म:** 12वीं सदी, कर्नाटक के उडुतरी गाँव जिला-शिवमोगा

II. पिता निर्मल शेट्टी और माता सुमति

III. इतिहास में वीर शैव आंदोलन से जुड़े कवियों, रचनाकारों की एक लंबी सूची है। अक्कमहादेवी इस आंदोलन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण कवयित्री थीं। चन्नमल्लिकार्जुन देव (शिव) इनके आराध्य थे।

IV. अक्कमहादेवी अपूर्व सुंदरी थीं। एक बार वहाँ का स्थानीय राजा इनका अद्भुत - अलौकिक सौंदर्य देखकर मुग्ध हो गया तथा इनसे विवाह हेतु इनके परिवार पर दबाव डाला। अक्कमहादेवी ने विवाह के लिए राजा के सामने तीन शर्तें रखीं। विवाह के बाद राजा ने उन शर्तों का पालन नहीं किया, इसलिए महादेवी ने उसी क्षण वस्त्राभूषण तथा राज-परिवार को छोड़ दिया।

V. पर यह त्याग स्त्री केवल शरीर नहीं है इसके गहरे बोध के साथ महावीर आदि महापुरुषों के समक्ष खड़े होने का प्रयास था। इस दृष्टि से देखें तो मीरा की पंक्ति **'तन की आस कबहू नहीं कीनी ज्यों रणमाँही सूरो'** अक्क पर पूर्णत: चरितार्थ होती है।

2. साहित्यिक-परिचय

I. अक्कमहादेवी की कविता पूरे भारतीय साहित्य में इस क्रांतिकारी चेतना का पहला सर्जनात्मक दस्तावेज़ है और संपूर्ण स्त्रीवादी आंदोलन के लिए एक अजस्र प्रेरणास्रोत भी।

II. अक्क के कारण शैव आंदोलन से बड़ी संख्या में स्त्रियाँ (जिनमें अधिकांश निचले तबकों से थीं) जुड़ीं और अपने संघर्ष और यातना को कविता के रूप में अभिव्यक्ति दी।

III. प्रमुख रचनाएँ -हिंदी में वचन सौरभ नाम से अंग्रेज़ी में स्पीकिंग ऑफ़ शिवा (सं.- ए. के. रामानुजन) बसवन्ना और अल्लामा प्रभु इनके समकालीन कन्नड़ संत कवि थे। कन्नड़ भाषा में **अक्क** शब्द का अर्थ बहिन होता है।

पाठ का सार

यहाँ इनके दो वचन लिए गए हैं। दोनों वचनों का अंग्रेज़ी से अनुवाद **केदारनाथ सिंह** ने किया है। प्रथम कविता या वचन में इंद्रियों पर नियंत्रण का संदेश दिया गया है। यह उपदेशात्मक न होकर प्रेम भरा मनुहार है।

दूसरा वचन एक भक्त का ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण है। चन्नमल्लिकार्जुन की अनन्य भक्त अक्कमहादेवी उनकी अनुकंपा के लिए हर भौतिक वस्तु से अपनी झोली खाली रखना चाहती हैं। वे ऐसी निस्पृह स्थिति की कामना करती हैं जिससे उनका स्व या अहंकार पूरी तरह से नष्ट हो जाए।

(1)

हे भूख। मत मचल

© JCERT not to be republished

प्यास, तड़प मत

हे नींद। मत सता

क्रोध, मचा मत उथल-पुथल

हे मोह। पाश अपने ढील

लोभ, मत ललचा

हे मद! मत कर मदहोश

ईर्ष्या, जला मत

ओ चराचर! मत चूक अवसर

आई हूँ संदेश लेकर चन्नमल्लिकार्जुन का

I. शब्दार्थ-

मचल- मचलने कि क्रिया,ज़िद पर आजाना

उथल- पुथल-हलचल

पाश - बंधन,वह वस्तु जिसमें कोई वस्तु आदि फँसाई जा सके

ढील- ढीला करना

मोह- अज्ञान, नासमझी।

मद- अहंकार,नशा

ईर्ष्या- जलन,डाह

चराचर- जड़ और चेतन,संसार के सभी प्राणी।

चन्नमल्लिकार्जुन- सुन्दर चमेली के फूल के समान श्वेत, सुन्दर प्रभु (शिव)

II. प्रसंग-प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह'भाग-1 में संकलित 'वचन'नामक पाठ से उद्धृत है।जो शैव आंदोलन से जुड़ी कर्नाटक के प्रसिद्ध कवयित्री अक्क महादेवी द्वारा रचित है ।इस पद में कवयित्री इंद्रियों के नियंत्रण का संदेश देती है जो ईश्वर को प्राप्त करने हेतु आवश्यक है।

III. व्याख्या- पद में अक्क महादेवी इंद्रियों से आग्रह करती है।वे भूख से कहती है कि तू मेरे अंदर हलचल मत कर,प्यास से कहती है कि तू मेरे अंदर और पाने की लालसा मत जगा,नींद से कहती है कि तू मुझे व्याकुल मत कर,क्रोध से कहती है कि तू मन में उथल-पुथल मत कर,।मोह से कहती है कि तू अपने बंधन ढीला कर दे,लोभ से कहती है कि तू मेरे मन में लालच मत भर,मद से कहती है कि मुझे घमंड मत करवा,ईर्ष्या से कहती है कि मेरे मन में दूसरों के प्रति जलन पैदा मत कर अर्थात् कवयित्री सभी इन्द्रियों को अपने वश में रखने की सीख समस्त चराचर को दे रही है ।कवयित्री जड़ और चेतन सभी को संबोधित करते हुए कहती है कि हे चराचर! ये सन्देश भगवान शिव का है इसलिए बिना अवसर गवाएँ ये सीख धारण कर लो ।

IV. विशेष-

प्रभु-भक्ति के लिए इंद्रिय व भाव नियंत्रण पर बल दिया गया है।

सभी भावों व वृत्तियों को मानवीय पात्रों के समान प्रस्तुत किया गया है, अत: मानवीकरण अलंकार है।

अनुप्रास अलंकार की छटा है।

शांत रस का परिपाक है।

© JCERT not to be republished

(2)

हे मेरे जूही के फूल जैसे ईश्वर

मँगवाओ मुझसे भीख

और कुछ ऐसा करो

कि भूल जाऊँ अपना घर पूरी तरह

झोली फैलाऊँ और न मिले भीख

कोई हाथ बढ़ाए कुछ देने को

तो वह गिर जाए नीचे

और यदि मैं झुकूँ उसे उठाने

तो कोई कुत्ता आ जाए

और उसे झपटकर छीन ले मुझसे।

I. प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह' भाग-1 में संकलित 'वचन' नामक पाठ से उद्धृत है। जो शैव आंदोलन से जुड़ी कर्नाटक के प्रसिद्ध कवयित्री अक्क महादेवी द्वारा रचित है । काव्यांश में कवयित्री ईश्वर से अभावग्रस्त जीवन की माँग करती है ताकि धन प्राप्त करके होने वाले घमंड से बची रहें और ईश्वर को प्राप्त कर सकें।

II. व्याख्या– कवयित्री भगवान शिव से निवेदन करती हुई कहती ही कि हे मेरे जूही के फूल जैसे कोमल हृदय वाले प्रभु!आप मुझसे ऐसे-ऐसे कार्य करवाएँ जिससे मेरा अहंभाव नष्ट हो जाए। आप मेरे जीवन में ऐसी परिस्थिति लाइए जिससे मैं अपने घर की सारी मोह-माया छोड़ दूँ और मैं भीख माँगूँ ।इतना ही नहीं जब मैं भीख माँगने के लिए हाथ फैलाऊँ और कोई मुझे कुछ देने के लिए हाथ आगे बढ़ाए तो हाथ से वह वस्तु गिर जाए और उसे लेने के लिए मैं झुकूँ तो उसे कुत्ता कहा जाए ।कवयित्री का आशय यह है कि ईश्वर उन्हें ऐसा अभावग्रस्त जीवन दें कि भीख माँगने से भी भीख न मिले ताकि ईश्वर की सच्ची-भक्ति करती रहूँ।

III. विशेष–

ईश्वर भक्ति के लिए अभावग्रस्त जीवन की माँग अद्भुत बन पड़ा है।

जूही के फूल जैसे ईश्वर' में उपमा अलंकार है।

अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।

सहज एवं सरल भाषा है।

'घर' सांसारिक मोह-माया का प्रतीक है।

कविता के साथ

1. लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ बाधक होती हैं- इसके संदर्भ में अपने तर्क दीजिए।

उत्तर— इंद्रियाँ अनुभव का साधन हैं। हमारी इंद्रियाँ हमें काम,क्रोध,लोभ,मोह,मद,ईर्ष्या आदि के प्रति आकर्षित होती है जिससे हम अपने जीवन के लक्ष्य(कवयित्री के अनुसार ईश्वर कि प्राप्ति) की प्राप्ति नहीं कर पाते। इसलिए कहा जा सकता है कि इंद्रियाँ लक्ष्य प्राप्ति में बाधक हैं।

© JCERT not to be republished

2. ओ चराचर! मत चूक अवसर इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस पंक्ति में अक्क महादेवी का कहना है कि प्राणियों ने जो जीवन प्राप्त किया है, उसे यदि वे शिव की भक्ति में लगाएँ तो उनका कल्याण हो जाएगा। समय बीत जाने के बाद कुछ नहीं मिलता। जीव इंद्रियों के वश में होकर सांसारिक मोह-माया में उलझा रहता है। वह इन चक्करों में उलझा रहा तो ईश्वर-प्राप्ति का अवसर चूक जाएगा।

3. ईश्वर के लिए किस दृष्टांत का प्रयोग किया गया है। ईश्वर और उसके साम्य का आधार बताइए।

उत्तर- अक्क महादेवी दूसरे वचन में ईश्वर को जूही के फूल के समान बताती हैं। इन दोनों में साम्य का आधार यह है कि जिस प्रकार जूही का फूल श्वेत,सात्विक, कोमल और सुगंधयुक्त है, उसी प्रकार ईश्वर भी समस्त विश्व में सबसे सात्विक, कोमल हृदय हैं। जिस प्रकार जूही का पुष्प अपनी सुगंध बिखेरने में भेदभाव नहीं करता, उसी प्रकार ईश्वर भी अपनी कृपा सब पर समान रूप से बरसाते हैं।

4. अपना घर से क्या तात्पर्य है? इसे भूलने की बात क्यों कही गई है ?

उत्तर- अपना घर' से तात्पर्य है-मोह-माया से युक्त जीवन। व्यक्ति इस घर में सभी से लगाव महसूस करता है। वह इसे बनाने व बचाने के लिए हर प्रयास करता है ।कवयित्री इसे भूलने की बात कहती है, क्योंकि मोह-माया रूपी घर को छोड़े बिना ईश्वर-भक्ति नहीं की जा सकती। मोह-माया रूपी घर को छोड़ने के बाद मनुष्य एकाग्रचित होकर भगवान में ध्यान लगा सकता है।

5. दूसरे वचन में ईश्वर से क्या कामना की गई है और क्यों?

उत्तर- दूसरे वचन में अक्कमहादेवी ईश्वर से कहती हैं कि मुझसे भीख मँगवाओ; मेरी यह दशा कर दो कि भीख में मिला भी गिर जाए और कुत्ता उसे झपट कर खा जाए। यह सब कामना करने के पीछे कवयित्री की स्वयं के अहंकार को शून्य बनाने की भावना छिपी है। संसार द्वारा उपेक्षित और तिरस्कृत व्यवहार से हम ईश्वर की अनन्य भक्ति की ओर प्रवृत्त होते हैं।

कविता के आस-पास

1. क्या अक्क महादेवी को कन्नड़ की मीरा कहा जा सकता है? चर्चा करें।

उत्तर- मीराबाई ने भक्ति में लीन होकर घर-परिवार और सांसारिक मोह त्याग दिया था, ठीक ऐसा ही व्यवहार अक्कमहादेवी ने भी किया था। इस दृष्टि से देखें तो मीरा की पंक्ति 'तन की आस कबहू नहीं कीनी ज्यों रणमाँही सूरो' अक्कमहादेवी पर पूर्णतः चरितार्थ होती है। पुस्तकालय से दोनों कवयित्रियों का साहित्य लें, तुलनात्मक पद एवं वचन पढ़कर कक्षा में चर्चा का आयोजन करें।

© JCERT not to be republished